तत्त्वार्थसूत्र-
जैनागमसमन्वय



समन्वयकर्ता

साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर

उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज (पंजाबी)



प्रकाशिका

श्रीमती चन्द्रावती जी

सुपुत्री लाला शेरसिंह जी जैन

रोहतक

प्रथमावृत्ति ५००] फरवरी १९३६ [वीर संवत् :



श्रीमती चन्द्रापति जी सुपुत्री लाला शेरसिंह जी जैन

चित्रपरिचय

पुस्तक के आरम्भ में जिन देवी जी का चित्र दिया गया है वह रोहतकनिवासी श्रीयुत लाला शेरसिंह जी की सुपुत्री है। इनका नाम चन्द्रापति है। इनका जन्म विक्रम सं० १९६५ और विवाहसंस्कार १९७६ में हुआ था। परन्तु दुर्दैववशात् विवाहसंस्कार के बाद कुछ ही महीनों में इनके होनहार पतिदेव का स्वर्गवास हो गया।

बहुत छोटी अवस्था में, वस्तुतः कुमारावस्था में ही विधवा होने पर भी माता पिता के सद्व्यवहार और साधुजनों के सत्संग से देवी चन्द्रापति जी की प्रतिदिन कल्याणकारी धर्म की ओर रुचि बढ़ने लगी और आज तक वह निरन्तर बढ़ती ही चली जारही है।

बहन चन्द्रापति जी धर्मध्यान में निरन्तर मग्न रहकर जहां अपने सतीत्व का संरक्षण कर रही हैं वहाँ अपने द्रव्य को

भी एकमात्र धार्मिक कार्यों में ही व्यय कर उसका सदुपयोग कर रही हैं। गोशाला, विद्याशाला और धर्मपुस्तकप्रचार आदि अनेक शुभ कार्यों में आज तक इन्होंने अनुमानतः सोलह सत्तरह हजार रुपया दान दिया है और प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशनार्थ भी जो कुछ द्रव्य व्यय हुआ है वह सब इन्हीं देवी जी की उदारता और गुणप्रियता का फल है। अन्यान्य धनाढ्य जैन महिलाओं को भी बहन चन्द्रावति जी की दानपरायणता का अनुकरण करना चाहिये। बाई चन्द्रावति जी निस्सन्देह वर्तमान समय की जैन बाल विधवाओं में एक आदर्श देवी हैं।

FOREWORD

The Upādhyāya, Śrī Ātmā Rām jī is a well known monk of the Sthānakavāsī Sect. Ever since his initiation into the order he has devoted himself to a study of Jaina Philosophy and literature. He has done a useful work by translating the following Sūtras into Hindi :—

1. The Anuyogadvāra
2. The Āvaśyaka
3. The Daśāśrutaskandha
4. The Daśavaikālika
5. The Uttarādhyayana

Besides these he compiled from the Sūtras an original treatise entitled *Jaina tattva kalikā vikāsa* where the original texts have been translated into Hindi and explained fully.

For use in Jain Schools the Upadhyaya compiled a set of readers wherein he has combined sacred and secular instruction

Upādhyāya Ātmā Rām ji is a thorough scholar of Jaina literature not only on the traditional lines but on the comparative lines also Some years ago he published a valuable paper in the Hindi monthly Saraswati wherein he compared a number of passages from the Jaina Sūtras with similar ones found in the Buddhist literature The present volume i e the *Tattvarthasūtra Jaināgama Samanvaya* is another work of this kind Here of course the material compared comes from the Jaina sources only The *Tattvārtha* or the *Tattvārthādhigama Sutra* (also called the *Moksa Śastra)* is the earliest extant Jaina work in Sanskrit and is composed in the Sūtra style It is regarded authoritative both by the Digambaras and the Śvetāmbaras Its

author Umāsvāti (according to the Digambaras Umāsvāmī) lived about 2 000 years ago This Sūtra was one of the most widely and deeply studied works in the past as the number of commentaries on it (about forty) shows Leaving aside the question whether the *Āgamas* are older or later than the *Tattvārtha Sūtra*, Upādhyāya Ātmā Rām ji has been able to find out from the *Āgamas* passages corresponding to all the individual sūtras of the *Tattvārtha* For his comparison he has chosen the Digambara recension of the *Tattvārtha* perhaps to indicate that so far as the fundamental principles are concerned there is not much difference of opinion between the Digambaras and the Śvetāmbaras The passages quoted from the *Āgamas* often have a striking similarity with the sūtras of the *Tattvārtha* both in words and meaning

It hardly needs to be added that the present

work of Upādhyaya Ātma Rām ji is a highly valuable apparatus for Research connected with Jaina philosophy and literature and as such it will be fully appreciated by scholars working in that direction

Oriental College }
LAHORE }

BANARSI DAS JAIN

प्रस्तावना

इस अनादि संसार चक्र में परिभ्रमण करते हुए आत्मा को मनुष्य जन्म और आर्यत्व भाव की प्राप्ति हो जाने पर भी श्रुतिधर्म की प्राप्ति दुर्लभ ही है। इस के अतिरिक्त सम्यग्दर्शन भी सम्यक्श्रुत पर ही निर्भर है। अतएव उक्त सब साधन मिल जाने पर भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिये सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उक्त प्राप्ति के लिये अध्ययन करने योग्य कौन २ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनको सम्यक्श्रुत का प्रतिपादक कहा जाए। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि जिन ग्रंथों के प्रणेता सर्वज्ञ अथवा सर्वज्ञसदृश महानुभाव हैं वह आगम ही अध्ययन करने योग्य है। क्योंकि जिसका वक्ता आप्त (सर्वज्ञ) होता है वही आगम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण होता है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति क्षायिक, क्षायोपशमिक

अथवा क्षोपशमिक भाव पर निर्भर है तथापि सम्यक्श्रुत को उसकी उत्पत्ति में कारण माना गया है। अतएव सिद्ध हुआ कि सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

श्वेताम्बर—स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुसार सम्यक्श्रुत का प्रतिपादन करने वाले ३२ आगम ही प्रमाणकोटि में माने जाते हैं। वे निम्न प्रकार हैं —

११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ४ मूल, ४ छेद और ३२ वां आवश्यक सूत्र।

इनके अतिरिक्त इन आगमों के आधार से एव इनके अविरुद्ध बने हुए ग्रंथों को न मानने में भी उक्त सम्प्रदाय आग्रहशील नहा है।

उक्त शास्त्रों के विषय में विशेष परिचय प्राप्त करने के लिये इस विषय के जैन एतिहासिक ग्रंथ देखने चाहियें।

अनेक महानुभावों न उक्त आगमों क आधार पर अनेक प्रकार के ग्रन्थो की रचना की है जिनका अध्ययन जैन समाज में अत्यन्त आदर और पूज्य भाव से किया जा रहा

है। इन लेखकों में से भी जिन महानुभावों ने आगमों में से आवश्यक विषयों का सग्रह कर जनता का परमोपकार किया है उनको अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखा जाता है और उनके ग्रथ जैन समाज में अत्यन्त आदरणीय समझे जाते हैं। वर्तमान ग्रथ तत्त्वार्थसूत्र (*मोक्ष शास्त्र*) की गणना उन्हीं आदरणीय ग्रथों में है। इस ग्रथ में इसके रचयिता ने आगमों में से आवश्यक विषयों का सग्रह कर जनता का परमोपकार किया है। इसमें तत्त्वों का सग्रह समयोपयोगी तथा सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है। इसके कर्त्ता ने आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी से विषयों का सग्रह कर उनको सस्कृत भाषा के सूत्रों में प्रगट किया है। इससे जान पड़ता है कि उस समय सस्कृत भाषा में सूत्र रूप में लिखने की प्रथा विद्वानों में आदर पाने लगी थी। सूत्रकार ने अपने ग्रथ में जैन तत्त्वों का दिग्दर्शन विद्वानों के भावानुसार सस्कृत भाषा में किया। प्राय विद्वानों का मत है कि तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता का समय विक्रम की प्रथम शताब्दी है। संस्कृत

भाषा उस समय विकसित हो रही थी। जिस प्रकार इस ग्रंथ के कर्ता ने इस संग्रह में अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार अनेक विद्वानों ने इसके ऊपर भिन्न २ टीकाओं की रचना करके जैन तत्वों का महत्त्व प्रगट किया है। और इस ग्रंथ को आगम के समान ही प्रमाण कोटि में स्थान देकर इसके महत्त्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया है।

पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज ने जैन तत्वों को आगमों से संग्रह कर जैन और जनेतर जनता का बड़ा भारी उपकार किया है।

यद्यपि इस सूत्र को संग्रह ही माना गया है, किन्तु यह ग्रन्थ सूत्रकार की काल्पनिक रचना नहीं है। कारण कि इस ग्रन्थ में जिन २ विषयों का संग्रह किया गया है, उन सब का आगमों में स्पष्ट रूप से वर्णन है। अतः स्वाध्यायप्रेमियों को योग्य है कि वह भक्ति और श्रद्धापूर्वक आगम तथा सूत्र दोनों का ही स्वाध्याय करें जिससे भेद भाव मिटकर जैन

समाज उन्नति के शिखर पर पहुंच जावे।

अब रहा यह प्रश्न कि क्या यह ग्रन्थ वास्तव में संग्रह ग्रन्थ है? सो आगमों का स्वाध्याय करने वाले तो इस ग्रन्थ को आगमों से संग्रह किया हुआ मानते ही हैं। इसके अतिरिक्त आचार्यवय हेमचन्द्रसूरि ने अपने बनाये हुए 'सिद्धहेम शब्दानुशासन' नाम के व्याकरण में पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज को संग्रहकर्त्ताओं में उत्कृष्ट संग्रहकर्त्ता माना है। जैसा कि उन्होंने उक्त ग्रन्थ की स्वोपज्ञवृत्ति में कहा है।

उत्कृष्टेऽनूपेन २। २। ३९

उत्कृष्टार्थादनूपाभ्यां युक्ताद्द्वितीया स्यात्। अनुसिद्धसेनं कवयः। उपोमास्वातिं संग्रहीतारः ॥३९॥

स्वोपज्ञ बृहद्वृत्ति में भी उक्त आचार्यवर्य ने उक्त सूत्र की व्याख्या में कहा है —

"उत्कृष्टेऽर्थे वर्तमानात् अनूपाभ्यां युक्ताद् गौणान्नाम्नो द्वितीया भवति। अनुसिद्धसेनं कवयः। अनुमल्लवादिनं तार्किकाः। उपोमास्वातिं संग्रहीतारः। उपजिनभद्रक्षमाश्रमणं

याख्यातार । तस्माद ये हीना इत्यर्थः ॥३६॥'

आचार्य हेमचन्द्र का समय विक्रम की १२ वी शताब्दी सभी विद्वानों को मान्य है। आपके कथन से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि पूज्यपाद उमास्वाति संग्रह करने वालों में सबसे बढ़कर संग्रह करने वाले माने गये हैं। आगमों से संग्रह किये जाने से यह ग्रन्थ भी संग्रहग्रंथ माना गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भगवान् उमास्वाति ने संग्रह किस रूप में किया है? इसका उत्तर यह है कि इस ग्रन्थ में दो प्रकार से संग्रह किया गया है। कहीं पर तो शब्दश संग्रह है अर्थात् आगम के शब्दों को संस्कृत रूप दे दिया गया है और कहीं पर अर्थसंग्रह है अर्थात् आगम के अर्थ का लक्ष्य में रखकर सूत्र की रचना की गई है। कहीं २ पर आगम में आये हुए विस्तृत विषयों का संक्षेप रूप से वर्णन किया गया है।

आगमों से किस प्रकार इस शास्त्र का उद्धार किया गया

है ? इस विषय को स्पष्ट करने के लिये ही वर्तमान ग्रन्थ विद्वत्समाज के सम्मुख रखा जा रहा है । इसका यह भी उद्देश्य है कि विद्वान् लोग आगमों के स्वाध्याय का लाभ उठा सकें ।

इस ग्रंथ में सूत्रों का आगमों से समन्वय किया गया है । इसमें पहले तत्त्वार्थसूत्र का सूत्र, फिर आगम प्रमाण उसके पश्चात् उस आगम पाठ की संस्कृत छाया और अन्त में आगम पाठ की भाषा टीका दी गई है, जिससे पाठकवर्ग आगम और सूत्र के शब्द और अर्थों का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

सूत्रों के सामान्य अर्थ इस ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट नं० २ में दे दिये गये हैं ।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस ग्रन्थ में दिये हुए आगम प्रमाण आगमोद्धार समिति द्वारा मुद्रित हुए, आगमों से दिये गये हैं ।

पाठकों के सम्मुख सूत्र के पाठ से आगमों के पाठ

यह समन्वय उपस्थित किया जाता है। यदि आगम ग्रंथ के कोइ विद्वान् समन्वय में कहीं त्रुटि समझें तो उसको स्वयं समन्वय कर पूर्ण पाठ से अवगत करने की कृपा करें। क्योंकि सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता।

यह ग्रन्थ इतना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वाध्याय करने योग्य है। वास्तव में यह तत्वार्थसूत्र आगम गन्था की कुञ्जी है। अतः जिन २ विद्यालयों हाई स्कूलों और कालेजों में तत्त्वार्थसूत्र पाठ्य क्रम में नियत किया हुआ है उन २ संस्थाओं के अध्यक्षों को योग्य है कि वह सूत्रों के साथ ही साथ बालकों को आगम के समन्वय पाठों का भी अध्ययन करावें जिससे उन बालकों को आगमों का भी भली भांति ज्ञान हो जावे।

कुछ लोग यह शंका भी कर सकते हैं कि "संभव है कि श्वेताम्बर आगमों में तत्त्वार्थसूत्र के इन सूत्रों की ही व्याख्या की गई हो। सो इस विषय में यह बात स्मरण रखने की है कि जैन इतिहास के अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है

कि आगम ग्रन्थों का अस्तित्व उमास्वाति श्री महाराज से भी पहले था। इसके अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र और जैन आगमों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट ही प्रगट हो जावेगा कि कौन किस का अनुकरण है। अतएव सिद्ध हुआ कि आगमों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, जिस से सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति होने पर निर्वाणपद की प्राप्ति हो सके। अन्त में आगमाभ्यासी सज्जनों की सेवा में प्रार्थना है कि वे कहीं पर यदि कोई त्रुटि देखें या, किसी स्थल में आगमपाठों के साथ किये गये समन्वय में कुछ न्यूनता देखें और उन की दृष्टि में कोई ऐसा आगम पाठ हो जिससे कि उस कमी की पूर्ति हो सके तो वे महानुभाव कृपा करके हमें अवश्य सूचित करें ताकि इस ग्रन्थ की आगामी आवृत्ति में उसका प्रबन्ध किया जावे। आशा है सज्जन पुरुष हमारे इस विनम्र निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

श्री श्री श्री १००८ आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद मोतीराम जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १००८ गणावच्छेदक

यह समन्वय उपस्थित किया जाता है। यदि आगम ग्रंथ के कोई विद्वान् समन्वय में कहीं त्रुटि समझें तो उसको स्वयं समन्वय कर पूर्ण पाठ से अवगत करने की कृपा करें। क्योंकि सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता।

यह ग्रंथ इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वाध्याय करने योग्य है। वास्तव में यह तत्त्वार्थसूत्र आगम ग्रन्थों की कुञ्जी है। अतः जिन २ विद्यालयों हाई स्कूलों और कालेजों में तत्त्वार्थसूत्र पाठ्य क्रम में नियत किया हुआ है उन २ संस्थाओं के अध्यक्षों को योग्य है कि वह सूत्रों के साथ ही साथ बालकों को आगम के समन्वय पाठों का भी अध्ययन करावें जिससे उन बालकों को आगमों का भी भली भांति ज्ञान हो जावे।

कुछ लोग यह शंका भी कर सकते हैं कि 'संभव है कि श्वेताम्बर आगमों में तत्त्वार्थसूत्र के इन सूत्रों की ही व्याख्या की गई हो। सो इस विषय में यह बात स्मरण रखने की है कि जैन इतिहास के अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है

कि आगम ग्रन्थों का अस्तित्व उमास्वाति जी महाराज से भी पहले था। इसके अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र और जैन आगमों का अध्ययन करने से यह स्वत ही प्रगट हो जावेगा कि कौन किस का अनुकरण है। अतएव सिद्ध हुआ कि आगमों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, जिस से सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति होने पर निर्वाणपद की प्राप्ति हो सके। अन्त में आगमाभ्यासी सज्जनों की सेवा में प्रार्थना है कि वे कहीं पर यदि कोई त्रुटि देखें या किसी स्थल में आगमपाठों के साथ किये गये समन्वय में कुछ न्यूनता देखें और उन की दृष्टि में कोई ऐसा आगम पाठ हो जिससे कि उस कमी की पूर्ति हो सके तो वे महानुभाव कृपा करके हमें अवश्य सूचित करें ताकि इस ग्रन्थ की आगामी आवृत्ति में उसका प्रबन्ध किया जावे। आशा है सज्जन पुरुष हमारे इस विनम्र निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

श्री श्री श्री १००८ आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद मोतीराम जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १००८ गणावच्छेदक

तथा स्थविरपदविभूषित श्री गणपतिराय जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ गणावच्छेदक श्री जयराम दास जी महाराज और उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ प्रवर्त्तक पद विभूषित श्री शालिगराम जी महाराज की ही कृपा से उन का शिष्य मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

गुरुचरणरजःसेवी
जैनमुनि उपाध्याय आत्माराम

आवश्यक सूचना

स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं

स्वाध्याय सर्व दुःखों से विमुक्त करने वाला है

[सज्झाय सव्व दुक्ख विमोक्खणे]

प्रिय विज्ञ पुरुषो ! आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि हमने, साहित्यरत्न जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज सगृहीत तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय में से केवल मूल-सूत्रों और मूल आगम पाठों को, उन से ही पुन सम्पादित कराकर स्वाध्याय प्रेमी महानुभावों के लिये, एक सुन्दर गुटका के आकार में प्रकाशित कर दिया है। इस स्वाध्यायगुटका में पूर्व प्रकाशित

तथा स्थविरपदविभूषित श्री गणपतिराय जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १ ८ गणावच्छेदक श्री जयराम दास जी महाराज और उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ प्रवर्त्तक पद विभूषित श्री शालिगराम जी महाराज की ही कृपा से उन का शिष्य मैं इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

गुरुचरणरजःसेवी
जैनमुनि उपाध्याय आत्माराम

आवश्यक सूचना

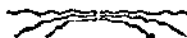
स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं

स्वाध्याय सर्व दुःखों से विमुक्त करने वाला है

[सज्झाय सव्व दुक्ख विमोक्खणे]

प्रिय मित्र पुरुषो ! आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि हमने, साहित्यरत्न जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज सगृहीत तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय में से केवल मूल-सूत्रों और मूल आगम पाठों को, उन से ही पुन सम्पादित कराकर, स्वाध्याय प्रेमी महानुभावों के लिये, एक सुन्दर गुटका के आकार में प्रकाशित कर दिया है। इस स्वाध्यायगुटका में पूर्व प्रकाशित

स्वाध्याय का महाफल



सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥

उत्तराध्ययन सू० अध्य० २६

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥

उत्तरा० अ० २६

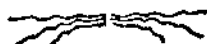
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे

उत्तरा० अ० २६ गा० १०

सज्झाय च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं—

उत्तरा० गा० ३७

स्वाध्याय महातप है



बारसविहम्मिवि तवे,
अब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
नवि अत्थि नवि य होही,
सज्झायसमं तवोकम्मं ॥१२९॥



सम्मति पत्र

सुप्रसिद्ध श्रीमान् प० हंसराज जी शास्त्री

प्रस्तुत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय स्वनामधन्य उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी की प्रोज्ज्वल प्रतिभा तथा उनके दीर्घकालीन सतत जैनागमाभ्यास का सुचारु फल है। आप श्वेताम्बर जैनधर्म की स्थानकवासी सम्प्रदाय में एक अद्वितीय विद्वान् हैं। यद्यपि आजतक आपने जैनधर्म से सम्बन्ध रखने वाली कई एक मौलिक पुस्तकें लिखी तथा कई एक जैन आगमों का सुबोध हिन्दी भाषा में अनुवाद भी किया तथापि प्रस्तुत ग्रन्थ के संकलन द्वारा आपने साहित्य प्रेमी जैन तथा जैनेतर सभ्य समाज की जो अमूल्य सेवा की है उसके लिये आपको जितना भी धन्यवाद दिया जाय उतना ही कम है।

आपका यह गम्भीर तत्त्वज्ञान के

पूर्ति के लिये तो पर्याप्त है ही, परन्तु भारतीय तत्त्वज्ञान की ऐतिहासिक दृष्टि से गवेषणा करने वाले विद्वानों के लिये भी यह बड़े महत्त्व की वस्तु है।

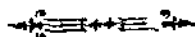
जैनतत्त्वज्ञान के संस्कृत वाङ्मय में तत्त्वार्थ सूत्र का स्थान सब से ऊंचा है। जैन तत्त्व ज्ञान विषयक संस्कृत भाषा का यह पहला ही ग्रन्थ है। जैनधर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय का इस के लिये बहुमान है। यही कारण है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर आम्नाय के सभी विद्वानों ने, अपनी २ योग्यता के अनुसार इस पर अनेक भाष्य वार्त्तिक और विशद टीकाएँ लिख कर अपने सत्त्व एवं श्रद्धा का परिचय दिया है।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रणेता वाचकवर्य उमास्वाति भी अपनी कक्षा के एक ही विद्वान् हुए हैं। जैन विद्वानों में तत्त्वज्ञान सम्बन्धी संस्कृत रचना में सब से अग्रस्थान इन्हीं को ही प्राप्त हुआ है। इन्होंने अपनी एक रचना में आगमों में रहे हुए समग्र जैनतत्त्वज्ञान को प्रांजल संस्कृत भाषा में जिस खूबी से संगृहीत किया है वह उनके प्रौढ़ पाण्डित्य,

मुद्रक
खजानचीराम जैन मैनेजर
मनोहर इलैक्ट्रिक प्रेस
सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर

तत्त्वार्थसूत्र-
जैनागमसमन्वयः ।

प्रथमोऽध्यायः ।



सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि* मोक्षमार्गः ॥१॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विना न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥

उत्त० अ० २८ गा० ३०

---

* सम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा—णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव। णिसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—पडिवाइ चेव अपडिवाइ चेव अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—पडिवाइ चेव अपडिवाइ चेव।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सूत्र ७०

तिविहे सम्मे पण्णत्ते । तं जहा—णाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे ।

स्था० स्थान ३ उद्देश ४ सू० १९४

दुविहे णाणे पण्णत्ते। तं जहा—पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २। केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—भवत्थकेवलणाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३। भवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४। सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५। अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ६। एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणेऽवि ७–८। सिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव परंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ९। अणंतरसिद्ध

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव १० । परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११ । णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२। ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव १३। दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते। तं जहा-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव १४। दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते तं जहा-मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव १५। मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६। परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव १७ आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-सुयनिस्सिए चेव असुय

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गु त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

स्सिए चेव १८ । सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-
त्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १९ । असुयनिस्सितेऽवि
मेव २० । सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-अंगपविट्ठे चेव
अंगबाहिरे चेव २१ । अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-
आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२ । आवस्सयवतिरित्ते
दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-कालिए चेव उक्कालिए चेव २३ ॥
स्था० स्थान २ उद्दे० १ सूत्र ७१

दुविहे धम्मे पण्णत्ते । तं जहा-सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव । सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव । **चरित्तधम्मे** दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-आगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

दुविहे संजमे पण्णत्ते* । तं जहा-सरागसंजमे चेव वीत

* 'अणगारचरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते' इत्यपि पाठान्तरम् ।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं॥

उत्त० अ० २८ गा० १-३

रागसंजमे चेव। सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा सुहुम संपरायसरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव। सुहुम संपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-पढमसमयसुहुम संपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु० । अथवा चरम समयसु० अचरिमसमयसु० । अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव। बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-पढमसमयबादर० अपढमसमयबादर० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-पडिवाति चेव अपडिवाति चेव। वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसाय वीयरागसंजमे चेव। उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥

तहियाण तु भावाण, सभावे उवएसणं ।
भावेण सद्दहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥
उ० अ० २८ गा० १५

तं जहा पढमसमयउवसन्तकसायवीयरागसनमे चेव अपढमसमय उव०। अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०। खीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ०। सयंबुद्धछउमत्थ० दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–पढमसमय० अपढमसमय०। अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०। केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–सजोगिकेवलिखीणकसाय० अजोगिकेवलिखीणकसायवीयराग०। सजोगिकेवलिखीणकसायसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–पढमसमय०

श्रुत मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

मइपुव्वं जेण सुअं न मई सुअपुव्विआ ॥

नंदि सूत्र २४

सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव ॥

स्था० स्थान २ उद्दे० १, सू० ७१

से किं तं अंगपविट्ठं ? दुवालसविहं पण्णत्तं । तं जहा-१ आयारो २ सुयगडो ३ ठाणं ४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ ७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइअदसाओ १० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुअं १२ दिट्ठिवाओ ॥

नंदि० सूत्र ४४

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥

दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते । तं जहा-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १, सू० ७१

से किं तं भवपच्चइअं ? दुण्हं । तं जहा–देवाण य नेरइयाण य ॥ नन्दि० सू० ७

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥

से किं तं खाओवसमिअं ? खाओवसमिअं दुण्हं। तं जहा–मणूसाण य पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य। को हेऊ खाओवसमिअं ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ॥ नन्दि० सू० ८

प्रज्ञापनासूत्रे अवधिज्ञानस्याष्टौ भेदा प्रदर्शिता । यथा—
आणुगामिते अणाणुगामिते,
वड्ढमाणते हीयमाणए पडिवाइ
अप्पडिवाइ अवट्ठिए अणवट्ठिए ।

पद ३३ सू० ३१६

दोण्ह खओवसमिए पण्णत्ते । त जहा-मणुस्साण चेव पाचदियतिरिक्खजोणियाण चेव ॥

स्था स्थान २ उ० १ सू० ७१

छव्विहे ओहिनाणे पण्णत्ते । त जहा-अणुगामिए, अणाणुगामिते, वड्ढमाणते, हीयमाणते, पडिवाई, अपडिवाइ ॥

स्था० स्थान ६ सू० ५२६

ऋजुविपुलमती मन पर्यय ॥२३॥

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते । त जहा-उज्जुमति चेव विउलमति चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्या तद्विशेष ॥२४॥

त समासओ चउव्विह पण्णत्त । त जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ त्थ दव्वओण उज्जुमईण अणते अणतपएसिए खधे जाणइ पासइ ते

चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसु
द्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ खेत्तओण
उज्जुमई अ जहन्नेणं अंगुलस्स असंखे ज्जइभाग
उक्कोसेण अहे जाव ईमीसेरयणप्पभाए पुढवीए
उवरिम हेट्ठिल्ले खुड्डग पयरेउड्ढजाव जोइसस्स
उवरिमतले तिरियं जाव अतो मणुस्सखित्ते अड्ढा
इज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरस्सकम्मभूमीसु तीसाए
अकम्मभूमीसु छप्पण्णए अतरदीवगेसु सण्णीण
पचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ
त चेव विउलमइ अड्ढाइज्जेहिं अगुलेहिं अब्भहियतर
विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत्त जाणइ पा
सइ कालओण उज्जुमइ जहण्णेण पलिओवमस्स—
असखिज्जइ भाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स
असखिज्जइ भाग अतीयमणागय वा काल जाणइ
पासइ त चेव विउलमइ अब्भहियतराग
तराग वितिमिरतराग जाणइ

उज्जुमई अणते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणतभाग जाणइ पासइ त चेव विउलमइए अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग जाणइ पासइ मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतिअत्थ पागडणं माणुसखित्त निबद्ध गुणपच्चइय चरित्तवओ सेत मणपज्जवणाणं ॥

नन्दि सू० १८

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्यो ऽवधि-मन पर्यययो ॥२५॥

भेद विसय सठाणे अब्भितर बाहिरेय देसोही।
ओहिस्सय खयवुड्ढी पडिवाइ चेव अपडिवाई ॥

प्रज्ञापना सू० प० ३३ गा० १

इड्ढीपत्त अपमत्त सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउअ कम्मभूमिअ गब्भवक्कतिअ मणुस्साण मणपज्जवनाण समुप्पज्जइ ॥

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥

तत्थ दव्वओण आभिणिबोहियणाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइ जाणइ न पासइ, खेत्तओण आभिणिबोहियणाणी आएसेण सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ, कालओण आभिणिबोहियणाणी आएसेण सव्वकालं जाणइ न पासइ, भावओण आभिणिबोहियणाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ न पासइ ॥

नन्दि० सू० ३७

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओण सुअणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइ जाणइ पासइ, खित्तओण सुअणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओण सुअणाणी उवउत्ते सव्वं ----

पासइ, भावओ णं सुअणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥

नंदि० सू० ५८

रूपिष्ववधेः ॥२७॥

ओहिदंसण ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु न पुण सव्वपज्जवेसु ॥

अनु० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ ओहिनाणी जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ खेत्तओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगे लोगप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ कालओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं आवलिआए असंखि

जाइ भाग जाणइ पासइ उक्कोसेण असखिज्जाओ उसप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईय अणागय च काल जाणइ पासइ भावओण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाण अणतभाग जाणइ पासइ ॥

तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥

सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणपज्जवा। ओहिणाण पज्जवा अनन्तगुणा, सुयणाणपज्जवा अनन्तगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अनतगुणा, केवलनाण पज्जवा अनतगुणा ॥

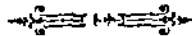
भग० श० ८ उ० २ सू० ३२३

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥

केवलदसण केवलदसणिस्स सव्वदव्वेसु अ, सव्वपज्जवेसु अ ॥

अनु० दर्शनगुणप्रमाण० सू० १४४

द्वितीयोऽध्यायः ।



औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥

छव्विहे भावे पण्णत्ते । तं जहा-ओदइए उवसमिते खत्तिते खओवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए ॥ स्था० स्थान ६ सू० ५३७

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥

गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥७॥

से किं तं उदइए ? दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-उदइए अ उदयनिप्फण्णे अ । से किं

अट्ठण्ह कम्मपयडीए उदएणं, से त उदइए। से किं त उदयनिप्फन्ने ? दुविहे पण्णत्ते। त जहा- जीवोदयनिप्फन्ने अ अजीवोदयनिप्फन्ने अ। से किं त जीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पण्णत्ते। त जहा- णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे पुढविकाइए जाव तसकाइए कोहकसाई जाव लोहकसाई इत्थी वेदए पुरिसवेदए णपुसगवेदए कण्हलेसे जाव सुक्क लेसे मिच्छादिट्ठी अविरए असण्णी अण्णाणी आ हारए छउमत्थे सजोगी ससारत्थे असिद्धे, से त जीवोदयनिप्फन्ने। से किं त अजीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पण्णत्ते। त जहा—उरालिअं वा सरीर उरालिअसरीरपओगपरिणामिअं वा दव्व, वेउवि अं वा सरीर वेउव्वियसरीरपओगपरिणामिअं व दव्व, एव आहारग सरीर तेअग सरीर कम्मग सरीर च भाणिअव्व, पओगपरिणामिए वण्णे ग

रसे फासे, से तं अजीवोदयनिप्फण्णे। से तं उदयनिप्फण्णे, से तं उदइए।

से किं तं उवसमिए? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उवसमे अ उवसमनिप्फण्णे अ। से किं तं उवसमे? मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं, से तं उवसमे। से किं तं उवसमनिप्फण्णे? अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—उवसंतकोहे जाव उवसंतलोभे उवसंतपेज्जे उवसंतदोसे उवसंतदंसणमोहणिज्जे उवसंतमोहणिज्जे उवसमिआ सम्मत्तलद्धी उवसमिआ चरित्तलद्धी उवसंतकसायछउमत्थवीयरागे, से तं उवसमनिप्फण्णे। से तं उवसमिए।

से किं तं खइए? दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—खइए अ खयनिप्फण्णे अ। से किं तं खइए? अट्ठण्ह कम्मपयडीणं खए णं, से तं खइए। से किं तं खयनिप्फण्णे? अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली खीण

आभिणिबोहियणाणावरणे खीणसुअणाणावरणे खीणओहिणाणावरणे खीणमणपज्जवणाणावरणे खीणकेवलणाणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे णाणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के; केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धी खीणचक्खुदंसणावरणे खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणओहिदंसणावरणे खीणकेवलदंसणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणसायावेअणिज्जे खीणअसायावेअणिज्जे अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअणे सुभासुभवेअणिज्जकम्मविप्पमुक्के खीणकोहे जाव खीणलोहे खीणपेज्जे खीणदोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के; खीणणेरइआउए खीणतिरिक्खजोणिआउए खीणमणुस्साउए खीणदेवाउए अणाउए निराउए खीणा

उए आउकम्मविप्पमुक्के, गइजाइसरीरंगोवंगबंधण संघयण संठाणअणेगबोंदिविंदसंघायविप्पमुक्के खीण सुभनामे खीणअसुभणामे अणामे निणामे खीण- नामे सुभासुभणामकम्मविप्पमुक्के, खीणउच्चागोए खीणणीआगोए अगोए निग्गोए खीणगोए उच्च णीयगोसकम्मविप्पमुक्के, खीणदाणंतराए खीण लाभंतराए खीणभोगंतराए खीणउवभोगंतराए खीणविरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए अंतरायकम्मविप्पमुक्के सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे, से तं खयनिप्फएणे, से तं खइए।

से किं तं खओवसमिए? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–खओवसमिए य खओवसमनिप्फएणे य। से किं तं खओवसमे? चउण्हं घाइकम्माणं खओव समेणं, तं जहा–णाणावरणिज्जस्स दंसणावरणि ज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतरायस्स ।

संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ॥ स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

समनस्काऽमनस्का ॥११॥

दुविहा नेरइया पएणत्ता, तं जहा-सन्नी चेव असन्नी चेव, एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा वेमाणिया।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७६

संसारिणस्त्रसस्थावरा ॥१२॥

संसारसमावन्नगा तसे चेव थावरा चेव।

स्था० स्थान २ उ १ सू० ५७

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥

पंच थावरा काया पएणत्ता, तं जहा-इंदे

थावरकाए (पुढवीथावरकाए) बंभेथावरकाए (आऊथावरकाए) सिप्पे थावरकाए (तेऊ थावरकाए) समती थावरकाए (वाऊथावरकाए) पजावच्चे थावरकाए (वणस्सइथावरकाए)।

स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३६४

द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥

से किं तं ओराला तसा पाणा ? चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा–बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया।

जीवा० प्रतिपत्ति० १ सू० २७

पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥

कति णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचेंदिया पण्णत्ता।

प्रज्ञा० सू० १५ इन्द्रियपद० उ० १

अण्डया पोयया जराउया समुच्छिमा उववाइया । दशवै० अ० ४ त्रसाधिकार

सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥

कइविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सीया जोणी उसिणा जोणी सीओसिणा जोणी। तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी। तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी।

प्रज्ञापना योनिपद ९

जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥

अण्डया पोयया जराउया। दशवैकालिक अ० ४

गब्भवक्कंतियाय। प्रज्ञापना १ पद

देवनारकाणामुपपाद ॥३४॥

दोण्ह उववाए पराणत्ते देवाण चेव नेरइयाण चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८५

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥

समुच्छिमाय प्रज्ञापना पद १

सूत्रकृताग श्रुत० २ अ० ३

औदारिकवैक्रियिकाऽऽहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥

कति ण भंते ! सरीरया पराणत्ता ? गोयमा ! पच सरीरा पराणत्ता, त जहा-ओरालिने, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ।

प्रज्ञापना शरीरपद २

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्तारा ॥१३॥

चुल्लहिमवंते जंबुद्दीवे सव्वकणगामए अच्छे सण्हे तहेव जाव पडिरूवे । इत्यादि ।

जम्बू वक्खार ४ सू० ७२

महाहिमवंते णाम सव्वरयणामए ।

जम्बू० सू० ७६

निसहे णाम सव्वतवणिज्जमए ।

जम्बू सू० ८१

णीलवंते णाम सव्ववेरुलिआमए ।

जम्बू० सू० ११०

रुप्पिणाम सव्वरूप्पामए ।

जम्बू० सू० १११

सिहरी णाम सव्वरयणामए ।

जम्बू० सू० १११

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्न णा तिवट्टति आयामविक्खम्भउच्चेत्तसंठाणपरिणाहेण ।
ठा० ठान २ उ० ३ सू० ८७

उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ वणसंडेहिं सपरिक्खित्ते । जम्बू० प्र० सू० ७२

पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥

जम्बुद्दीवे छ महद्दहा पगणत्ता, तं जहा-पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छद्दहे केसरिद्दहे पोंडरीयद्दहे महापोंडरीयद्दहे । ठा० स्थान० ६ सू० ५२४

प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रद ॥१५॥

दशयोजनावगाह ॥१६॥

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य पल्योपमस्थितय ससामानिकपरिषत्का ॥१९॥

तत्थ ण छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव परि ओवमट्ठितीताओ परिवसति । त जहा-सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी ।

स्थानांग स्थान ६ सू ५२४

गगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकातासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदा सरितस्तन्मध्यगा ॥२०॥

द्वयोर्द्वयो पूर्वा पूर्वगा ॥२१॥

शेपास्त्वपरगा ॥२२॥

जम्बुद्दीवे सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समुप्पेंति, त जहा–गगा रोहिता हिरी सीता णरकता सुवण्णकूला रत्ता । जम्बुद्दीवे सत्त महानदीओ पञ्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समुप्पेंति, त जहा–सिंधू रोहितसा हरिकता सीतोदा णारिकता रुप्पकूला रत्तवती ।

स्थानाग स्थान ७ सू ५५५

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गगासिन्ध्वादयो नद्य ॥२३॥

जम्बुद्दीवे भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ । गोअमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, त जहा–गगा सिंधू रत्ता रत्तवई । तत्थ ण एगमेगा महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेण लवणसमुद्द

जम्बू० ४० वक्खार ६ सू०

भरत षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥

जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे जंबुद्दीवदीव णउयसयभागे पंचछव्वीसे जोअणसए छच्च एगूण वीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेणं।

जम्बू० सू० १०

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ता ॥२५॥

जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवन्ते णामं वासहरपव्वए पाईणपडीणायए उदीणदाहिणवित्थिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्च

त्थिमिल्ल ल्वणसमुद् पुट्ठे पग जोयणसय उड्ढ उच्च
त्तेण पणवीस जोयणाइ उव्वेहण-पग जोयण
सहस्स बावन्न जोयणाइ दुवालसय एगूण वीसइ
भाए जोयणस्स विक्खमेण।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति चूलहिमवताधिकार

जम्बुद्दीवे दीवे हेमवए णाम वासे पण्णत्ते-पाईण
पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठण-
संठिए दुहा ल्वणसमुद् पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए
पुरत्थिमिल्ल ल्वणसमुद् पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए को
डीए पच्चत्थिमिल्ल ल्वणसमुद् पुट्ठे-दोणिण जोयण
सहस्साइ एग च पचुत्तर जोयणसयपचयए गूण
वीसईभाए जोयणस्स विक्खमेण।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति हेमवर्षाधिकार

जम्बुद्दीवे दीवे महाहिमवन्ते णाम वासहरपव्वए
पण्णत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे

दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्द पुट्ठे पचत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे दोजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णासं जोयणं उव्वेहेणं-चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णिय दसुत्तर जोयणसए दसयएगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेणं।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति महाहिमवताधिकार

जंबुदीवे दीवे हरिवासं णाम वासे पण्णत्ते-एवं जाव पचत्थिमिल्लं लवणसमुद्द पुट्ठे-अट्ठजोयणसहस्साइं चत्तारि एगवीसे जोयणसए एग च एगूणवीसइभाग जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप हरिवर्षाधिकार-

जंबुद्दीवे दीवे णिसहणाम वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं।

उव्वेहेण—सोलसजोयणसहस्साइ अट्ठयतयाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खमेण।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति निषधाधिकार २

जम्बुद्दीवे दीवे-महाविदेहवासे पण्णत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसठाण सठिए दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे पुरत्थ जाव पुट्ठे पच्च त्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमथा जाव पुट्ठे।

तित्तीस जोयणसहस्साइ छच्च चुलसीए-जोय णसए चत्तारिय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खमेण।

जम्बू० महाविदेहाधिकार

उत्तरा दक्षिणतुल्या ॥२६॥

जवुमदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणे ण वासहरपव्वया वहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता

मत्र णातिवट्टति आयामविक्खंभुच्चतोव्वेहसठाण परिणाहेण, त जहा-चुल्लहिमवते चेव सिहरिचेव एव महाहिमवते चेव रुप्पिचेव, एव निसढे चेव णीलवते चेव इत्यादि ।

स्था० स्थान २ उद्देश ३ सूत्र ८७

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता ॥२८॥

जबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुआसया सुसमसुसममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, त जहा-देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ॥

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुस मदुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विह रंति, त जहा–हेमवए चेव एरण्णवए चेव ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुयासया दुस मसुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विह रंति, त जहा–पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विह पि काल पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा–भरहे चेव एरवए चेव ॥

स्थानाग स्थान २ सूत्र ८६

जम्बुद्दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमे णवि, णेवत्थि ओसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते ॥

व्या० प्र० श० ५ उद्देश्य १ सू० १७८

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो है ॥ २९ ॥

कहारिवर्षकदैवकुरवका ॥२९॥

तथोत्तरा ॥३०॥

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पगणत्ता हिमवए चेव हेरन्नवते चेव हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव देवकुरा चेव उत्तरकुरु चेव एग पलिओवम ठिई पगणत्ता दो पलिओवमाइ ठिई पगणत्ता, तिगिण पलिओवमाइ ठिई पगणत्ता ।

जम्बू० द्वीप० वक्खार ४

विदेहेषु सख्येयकाला ॥३१॥

महाविदेहे मणुआण केवइय काल ठिइ पगणत्ता ? गोयमा ! जहगणेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी आउअ पालेंति ।

जम्बू० वक्खार ४ सूत्र ८२

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभाग ॥३२॥

जम्बुद्दीवे ण भंते ! दीवे भरहप्पमाणमेत्तेहिं
खंडेहिं केवइयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ? गोयमा !
णउअं खंडसयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ।

जम्बू० खंडयोजनाधिकार सू० १२५

द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥

धायइखंडे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स
पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता, बहुसम
तुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव धातकी
खंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर
दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव
भरहे चेव एरावए चेव । इच्चाइ ।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू०

पुष्करार्द्धे च ॥३४॥

पुक्खरवरदीवड्ढे पुरच्छिमद्धे ण मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण दो वासा पण्णत्ता, बहुसम तुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव तहेव जाव दो कुडाओ पण्णत्ता ।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ९३

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्या ॥३५॥

माणुसुत्तरस्स ण पव्वयस्स अंतो मणुआ ।

जीवा० प्रति० ३ मानुषोत्तरा० उद्दे० २ सूत्र १७८

आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— आरिआ य मिलक्खू य ।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधिकार

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥

से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पण्णरस विहा पण्णत्ता, तं जहा—पचहिं भरहेहिं पचहिं एरावएहिं पचहिं महाविदेहेहिं।

से किं तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसइ विहा पण्णत्ता, तं जहा—पचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पचहिं रम्मगवासेहिं, पचहिं एरण्णवएहिं, पचहिं देवकुरुहिं, पचहिं उत्तरकुरुहिं। सेत्त अकम्मभूमगा।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधि० सूत्र ३२

नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥

पलिओवमाउ तिन्नि य, उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १६८

मणुस्साणं भंते! केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं।

प्रज्ञा० पद ४ मनुष्याधिकार

तिर्यग्योनिजानाञ्च ॥३९॥

असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पन्नत्ता।

समवा० सू० समवाय ३

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई थलयराणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १८३

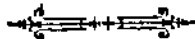
गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ति-

रिक्त्र जोणियाण पुच्छा ? जहएणेण अन्तोमुहुत्त उक्कोसेण तिरिण पलिओवमाइं ।

प्रज्ञापना स्थितिपद ४ तिर्यगधिकार

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये तृतीयोऽध्याय समाप्त ।

चतुर्थोऽध्यायः



देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥

चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा–भवणवई वाणमंतर जोइस वेमाणिया।

व्याख्या० श० २ उ० ७

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥

भवणवइ वाणमंतर चत्तारि लेस्साओ जोतिसियाणं एगा तेउलेसा वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेस्साओ। स्था० स्थान १ सू० ५१

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥

दसहा उभवणवासी अट्टहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०३॥
वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगायबोधव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२०७॥
कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिंदा बम्भलोगा य लंतगा ॥२०८॥
महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगासुरा ॥२०९॥
उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

भवणवई दसविहा पण्णत्ता वाणमंतरा अट्ठविहा पण्णत्ता, जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा-कप्पोववण्णगा य कप्पाइया य। से किं त कप्पोववण्णगा ? बारसविहा पण्णत्ता, त जहा-सोहम्मा, ईसाणा, सणंकुमारा, माहिंदा, बम्भलोगा, लंतया,

सहस्सारा, आणया, पाणया, आरणा, अच्चुत्ता।

प्रज्ञा० प्रथमपद देवाधिकार

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकश ॥४॥

देविंदा एव सामाणिया तायत्तीसगा लोगपाला परिसोववन्नगा अणियाहिवइ आयरक्खा।

स्था० स्थान ३ उ १ सू० १३४

देवकिब्बिसिए आभिजोगिए।

आपपा० जीवोप सू० ४१

चउव्विहा देवाण ठिती पण्णत्ता, तं जहा-देवे णाममेगे देवसिणाते णाममेगे देवपुरोहिते णाममेगे देवपज्जलणे णाममेगे।

स्था० स्थान ४ उ० १ सू० २४८

अवसेसाय देवा देवीओ
जम्बू० प्र० सू० ११० (आगमोदयसमिति)

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्का ॥५॥

कहि ण भंते ! वाणमन्तराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहि ण भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? साणं २ सामाणिय साहस्सीण साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि आहिवईणं साणं २ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च

जोसियाणं देवाणं
प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू०
तत्थ साणं २ ...

वास सहस्साए साए २ सामाणिय साहस्सीए साए २ अग्गमहिसीए सपरिवाराए साए परि साए साए २ अणियाए साए २ अणियाहिवईए साए २ आयरक्ख देव साहस्सीए अएऐ सिंच वहूए जोइसियाए देवाए देवीएय अहेवच्च जाव विहरति ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ४२

पूर्वयोर्द्वीन्द्रा ॥६॥

दो असुरकुमारिंदा पएएत्ता, त जहा–चमरे चेव वली चेव । दो एगगकुमारिंदा पएएत्ता, त जहा–धरणे चेव भूयाएंदे चेव। दो सुवएणकुमारिंदा पएए त्ता, त जहा–वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव । दो वि ज्जुकुमारिंदा पएएत्ता, त जहा–हरिचेव हरिसहे चेव । दो अग्गिकुमारिंदा पएएत्ता, त जहा–अग्गि सिहे चेव अग्गिमाणवे चेव । दो दीवकुमारिंदा

पएणत्ता, त जहा-पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव । दो उद हिकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा-जल्कते चेव जल प्पभे चेय । दो दिसाकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा- अमियगती चेव अमियवाहणे चेव । दो वातकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-वेल्ने चेव पभंजणे चेव । दो थणियकुमारिंदा पएणत्ता, त जहा-घोसे चेव महाघोसे चेव । दो पिसाइंदा पएणत्ता, त जहा-काले चेव महाकाले चेव । दो भूइंदा पएणत्ता, तं जहा- सुरूवे चेव पडिरूवे चेव। दो जक्खिंदा पएणत्ता, त जहा-पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव । दो रक्खसिंदा पएणत्ता, त जहा-भीमे चेव महाभीमे चेव । दो किन्नरिंदा पएणत्ता, त जहा-किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव । दो किंपुरिसिंदा पएणत्ता, त जहा-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव । दो महोरगिंदा पएणत्ता, त जहा-अतिकाए चेव महाकाए चेव । दो

वास सहस्साण साण २ सामाणिय साहस्सीण साण २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण परि साण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्ख देव साहस्सीण अण्णेसिंच वहूण जोइसियाण देवाण देवीणय अहेवच्च जाव विहरंति ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ४२

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥

दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा–चमरे चेव वली चेव । दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा–धरणे चेव भूयाणंदे चेव । दो सुवन्नकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा–वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव । दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा–हरिचेव हरिसहे चेव । दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता, त जहा–अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव । दो दीवकुमारिंदा

पण्णत्ता, त जहा-गीतरती चेव गीयजसे चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ६४

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥

शेषा स्पर्शरूपशब्दमन प्रवीचारा ॥८॥

परेऽप्रवीचारा ॥९॥

कतिविहा ण भते ! परियारणा पण्णत्ता? गोयमा ! पञ्चविहा पण्णत्ता, त जहा-कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा भवणवासि वाणमतरजोतिसि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारणा, सण कुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारणा, बभ लोयलतगेसु कप्पेसु देवा रूवपरियारणा, महा सुक्कसहस्सारेसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारणा, आण

यपाणय आरणअच्चुएसु देवा मणपरियारणा, गवे
ज्जग अणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा ।

प्रज्ञापना पद ३४ प्रचारणा विषय

स्था० स्थान २ उ० ४ सू० ११०

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णा-ग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥

भवणवई दसविहा पण्णत्ता, तं जहा-असुर
कुमारा, नागकुमारा, सुवण्णकुमारा, विज्जुकुमारा,
अग्गीकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसा
कुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमारा ।

प्रज्ञापना प्रथम पद देवाधिकार

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरग-गन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥

वाणमंतरा अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा-किण्ण

द्द्वीए पण्णत्ते, जाव अच्चुओ, गेवेज्जणुत्तरा य सव्वे महिड्ढीया ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ सूत्र २११ वैमानिकाधिकार

सोहम्मीसाणेसु देवा केरिसए कामभोगे पच्च णुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एव जाव गेवेज्जा अणुत्तरोववातियाँ ण अणुत्तरा सद्दा एव जाव अणुत्तरा फासा।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० २ सूत्र २१६

प्रज्ञापना पद २ देवाधिकार

असुरकुमार भवणवासि देव० पंचि० वेउव्विय सरीरस्स ण भंते ! के ? असुरकुमा राण

घणिय कुमाराणं, एव जोइसियाणं वाणमंतराणं एव जोइसियाणवि, सोहम्मीसाणं देवाणं एव चेव उत्तराउवेउव्विया जाव अच्चुओ कप्पो, नवरं सणं कुमारे भवधारणिज्जा जह० अंगु० असं० उक्को० छरयणीओ, एव माहिंदेवि, वभलोयलंतगेसु पंच रयणीओ, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणय पाणय आरणच्चुएसु तिण्णि रयणीओ गेवि ज्जगकप्पातीत वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउ० सरी० के महा० ? गो० ! गेवेज्जगदेवाणं एगा भवणिज्जा सरीरोगाहणा प० सा जह० अंगुल० असं० उक्को० दो० रयणी, एव अणुत्तरोववाइयदेवाणवि णवरं एक्का रयणी ।

प्रज्ञापना सूत्र शरीर पद २१ सूत्र २७२

तओ विसुद्धाओ ।

प्रज्ञापना १७ लश्यापद उद्देश ३

देवाए पुच्छा—गो० ! छ एयाओ चेव देवीए

पुच्छा, गो० ! चत्तारि पएद्द० जाव तेउलेस्सा, भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा, गोयमा ! एवं चेव एवं भवणवासिणीणवि वाणमंतरा देवाणं पुच्छा, गो० ! एवं चेव, वाणमंतरीणवि जोइसियाणं पुच्छा, गो० ! एगा तेउलेस्सा, एवं जोइसिणीणवि ।

वेमाणियाणं, पुच्छा, गो० ? तिन्नि त०—तेउ० पम्ह० सुक्कलेसा वेमाणिणीणं पुच्छा, गो० ? एगा तेउलेस्सा ।

प्रज्ञापना ६ १ लश्या पद उद्देश २ सूत्र २१६

असुरकुमाराणं पुच्छा, गो० ! पल्लगसंठिते, एवं जाव थणियकुमाराणं , वाणमंतराणं पुच्छा, गो० ! पडहग सं० जोतिसियाणं पुच्छा ? गो० ! झल्लरिसंठाणं सं० प० सोहम्मगदेवाणं पुच्छा ! गो० ! उड्ढमुयगागारसंठिए प० एवं जाव अच्चुयदेवाणं गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा गो० ! पुप्फचंगेरि संठिए प० अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा ?

गो० ! जवनालिया संठिते ओही प० ।

प्रज्ञापना सूत्र पद ३३ (सूत्र ३१६)

असुरकुमाराणं भंते ! ओहिणा केवइयं खेत्तं जा० पा० ? गोयमा ! जह० पणवीस जोयणाइं उक्को० असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० नागकुमाराणं-जह० पणवीसं जोयणाइं उ० संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० एवं जाव थणिय कुमारा। वाणमंतराणं जहा नागकुमारा, जोइसियाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो० ! ज० संखेज्जे दीवसमुद्दे उक्कोसेण वि संखेज्जे दीवसमुद्दे, सोहम्मगदेवाणं भंते ! केव० खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो० ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्को० अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए हिट्ठिले चरमंते तिरियं जाव असंखिज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सगाई विमाणाई ओहिणा जाणंति पासंति, एवं ईसाणगदेवावि सणंकुमारदेवावि एवं, चेव,

जाव अहे दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, एवं माहिंददेवावि, बंभलोयलंतगदेवा तच्चाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते महासुक्कसहस्सारगदेवा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते आणय पाणय आरणच्चुयदेवा अहे जाव पंचमाए धूमप्पभाए हेट्ठिल्ले चरमंते हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवा अधे जाव छट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले जाव चरमंते उवरिमगेविज्जगदेवाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जा० पा० ? गो० ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उ० अधे सत्तमाए हे० च० तिरियं जाव असंखेज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ओ० जा० पा० अणुत्तरोववाइयदेवाणं भंते के० खेत्त ओ० जा० पा० ? गो० संभिन्नं लोगनालिं ओ० जा० पा०

प्रज्ञापना अवधिपद ३३ सू० ३१८

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥

सोहम्मीसाणदेवाण कति लेस्साओ पन्नताओ ? गोयमा ! एगा तेऊलेस्सा पगणत्ता । सणकुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा एव बम्भलोगे वि पम्हा । सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा अणुत्तरोववातियाण एक्का परमसुक्कलेस्सा ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० १ सूत्र २१४
प्रज्ञापना पद १७ उद्दे० १ लश्याधिकार

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥

कप्पोपवरणगा बारसविहा पगणत्ता ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ५१

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिका ॥२४॥

बम्भलोए कप्पे लोगन्तिता देवा पगणत्ता ।

स्थानांग स्थान ८ सूत्र ६२३

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥

सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥
स्थानांग स्थान ६ सूत्र ६८४

एएसुणं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतीया देवा परिवसंति, तं जहा—
सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाए ॥२८॥
भगवती सूत्र ६ शतक ५ उद्दे०

विजयादिषु द्विचरमा ॥२६॥

विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा इत्यादि । प्रज्ञापना० पद १५ इंद्रियपद

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥

उववाइय मणुआ (सेसा) तिरिक्खजोणिया ।

दशवैका० अध्याय ४ षट्कायाधिकार

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनामिता ॥२८॥

असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवम ।

नागकुमाराणं देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओवमाइं देसूणाइं सुवण्णकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओवमाइं

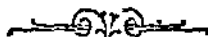
लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

लोगतिकदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

स्था० स्थान ८ सूत्र ६२३
व्याख्या शतक ६ उ० ५

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ।

पञ्चमोऽध्यायः



अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥

चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पएणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए।

स्थानांग स्थान ४ उद्दे० १ सूत्र २५१

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १० सूत्र ३०५

द्रव्याणि ॥२॥

जीवाश्च ॥३॥

कइविहाणं भंते ! दव्वा पएणत्ता ? गोयमा !

दुविहा पएणत्ता, त जहा—"जीवदव्वा य अजी
दव्वा य। अनुयोग० सूत्र १४

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥

रूपिण पुद्गला ॥५॥

पचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि,
कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ
धुवे नियए सासए अक्खए, अव्वए, अवट्ठि
निच्चे अरूवी। नन्दिसूत्र० सूत्र ५

पोग्गलत्थिकाय रूविकाय।

स्थानांगसूत्र स्थान ५ उद्दे० ३ सू

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्देश्य १

आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥

निष्क्रियाणि च ॥७॥

धम्मो अधम्मो आगास दव्व इक्किक्कमाहिय ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजंतवो ॥

उत्तराध्ययन० अध्य० २८ गाथा ८

अवट्ठिए निच्चे ।

नंदि० द्वादशाङ्गी अधिकार सूत्र ५८

असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥

चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला असंखेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे ।

स्थानांग० स्थान ४ उद्देश ३ सूत्र ३३४

आकाशस्याऽनन्ता ॥९॥

आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ।

प्रज्ञापना पद ३ सूत्र ४१

संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥ नाणो ॥११॥

रूवी अजीवदव्वाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—"खंधा, खंधदेसा, खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला, अणंता परमाणुपुग्गला अणंता दुप्पएसिया खंधा जाव अणंता दसपएसिया खंधा अणंता संखिज्जपएसिया खंधा, अणंता असंखिज्जपएसिया खंधा, अणंता अणंतपएसिया खंधा।

प्रज्ञापना ५ वां पद

लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥

कतिविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प०, तं जहा—लोयागासे य अलोयागासे य। लोयागासे णं भंते ? किं जीवा जीवदेसा

जीवपदेसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य जे रूवि ते चउव्विहा पएणत्ता, तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला—जे अरूवी ते पंचविहा पएणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए ॥

व्याख्या० श० २ उ० १० सू० १२१

अलोगागासे णं भंते ! किं जीवा ? पुच्छा तह

आकाशस्यावगाह ॥१८॥
शरीरवाङ्मन प्राणापाना पुद्गला-
नाम् ॥१९॥
सुखदु खजीवितमरणोपग्रहाश्च॥२०॥
परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥

धम्मत्थिकाए ण जीवाण आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति। गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए।

अहम्मत्थिकाए ण जीवाण किं पवत्तति? गोयमा! अहम्मत्थिकाएण जीवाण ठाणनिसीयण तुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाये

पन्नत्ति । ठाणलक्खणे ण अहम्मत्थिकाए ।

आगासत्थिकाए ण भंते ! जीवाण अजीवाण य किं पन्नत्ति ? गोयमा ! आगासत्थिकाएण जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए एगेण वि से पुन्ने दोहिंवि पुन्ने सयंपि माएज्जा । कोडिसए णवि पुन्ने कोडिसहस्सवि माएज्जा ॥१॥ अवगाहणालक्खणे ण आगासत्थिकाए ।

जीवत्थिकाएण भंते ! जीवाण किं पवत्तति ? गोयमा ! जीवत्थिकाएण जीवे अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण अणंताण सुयनाणपज्जवाण, एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे ण जीवे ।

व्या० प्र शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

जीवे ण अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण एवं सुयनाणपज्जवाण ओहिनाणपज्जवाण मणपज्जवनाणप० केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअन्ना

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, त जहा—परमाणुपोग्गला नोपरमाणुपोग्गला चेव ।

स्था॰ स्थान २ उ॰ ३ सू॰ ८२

भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥२६॥

भेदादणु ॥२७॥

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, त जहा—सइ वा पोग्गला साहन्नति परेण वा पोग्गला साहन्नति। सइ वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति ।

स्था॰ स्थान २ उ ३ सू॰ ८२

एगत्तेण पुहत्तेण खधाय परमाणु य ।

उत्तरा॰ अध्य॰ ३६ गा॰ ११

भेदसघाताभ्या चाक्षुष ॥२८॥

चक्खुदसण चक्खुदसणिस्स घड पड कड रहाइएसु दव्वेसु ।

अनुयोग॰ दर्शन गुणप्पमाण सू॰ १४४

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२९॥

सद्दव्व वा ।

व्या० प्र० शत० ८ उ० ६ सत्पदद्वार

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत् ॥३०॥

माउयाणुओगे (उपन्ने वा विगए वा धुवे वा) ।

स्थानाग स्थान १०

तद्भावाऽव्यय नित्यम् ॥३१॥

परमाणुपोग्गलेण भंते ! किं सासए असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए वण्णपज्जवेहिं जाव फास पज्जवेहिं असासए ।

व्या० प्र० शतक १४ उ० ४ सू० ५१२

जीवा० प्र० ३ उ० १ सूत्र ७७

जीवाण भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा !

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे॥

उत्तरा० सूत्र अध्य० २८ गाथा ६

कालश्च ॥३९॥

छव्विहे दव्वे पण्णत्ते, तं जहा-धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमये अ, सेतं दव्वणामे।

अनुयोग० द्रव्यगुण सू० १२४

सोऽनन्तसमयः ॥४०॥

अणंता समया।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत २५ उ० ५ सू० ७४७

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥

दव्वस्सिया गुणा।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा ६

तद्भाव. परिणामः ॥४२॥

दुविहे परिणामे पण्णत्ते, त जहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य ।

प्रज्ञापना परिणाम पद १३ सू० १८१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
पञ्चमोऽध्याय समाप्त ।

षष्ठोऽध्यायः



कायवाङ्मन कर्म योग ॥१॥

तिविहे जोए पएणत्ते, त जहा–मणजोए वइजोए कायजोए।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक० १६ उद्दे० १ सूत्र ५६४

स आस्रव ॥२॥

पञ्च आसवदारा पएणत्ता, त जहा–मिच्छत्त, अविरई, पमाया, कसाया, जोगा।

समवायाग समवाय ५

शुभ पुण्यस्याऽशुभ पापस्य ॥३॥

पुण्ण पावासवो तहा।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा १४

सकपायाऽकपाययो साम्परायिके
र्यापथयो ॥४॥

जस्स ण कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवन्ति तस्स ण ईरियावहिया किरिया कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ, जस्स ण कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स ण संपरायकिरिया कज्जइ नो ईरियावहिया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १ सूत्र २६७

इन्द्रियकपायाव्रतक्रिया पञ्चचतु-
पञ्चपञ्चविंशतिसंख्या पूर्वस्य भेदा ॥५॥

पंचिंदिया पण्णत्ता चत्तारि कसाया पण्णत्ता पंच अविरय पण्णत्ता पचवीसा किरिया पण्णत्ता

स्थानाग स्थान २ उद्देश १ सूत्र ६०

इन्दिय १ कसाय २ अव्वय ३ जोगा ४ पंच

चउ २ पंच ३ तिन्निरसाया किरियाओ पणवीसं
इमाओ अणुक्कमसो। नव तत्त्व प्रकरण १४

तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवी-र्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥

जे केइ खुद्दका पाणा अदुवा सति महालया।
सरिसं तेहिं वेरंति असरिसं ती य णो वदे ॥६॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं तु जाणए ॥७॥

सूत्रकृतांग श्रुतस्कन्ध २ अ. ५ गाथा ६-७

---

* व्याख्या—ये केचन क्षुद्रका सत्त्वा प्राणिन एकेन्द्रियद्वीन्द्रियादयोऽल्पकाया वा पञ्चेन्द्रिया अथवा महालया महाकाया सन्ति विद्यन्ते तेषां च क्षुद्रकाणामल्पकायानां कुन्थ्वादीनां महानालयः शरीरं येषां ते महालया हस्त्यादयस्तेषां च व्यापादने, सदृशं वैरमिति वज्रं कर्मविरोध लक्षणं वा वैरं तत्सदृशं समानम्, अल्पप्रदेशत्वात्सर्वजन्तूनां

आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोग
कृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रि
स्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥

च मव धसदृशत्वयोर्व्यवहरणं व्यवहारो नियुक्तिकत्वान्न युज्यते
तथाहि—न वध्यस्य सदृशत्वमसदृशत्वं चैकमेव । कर्मबन्धस्
कारणम् । अपि तु वधकस्य तीव्रभावो मन्दभावो ज्ञात
भावोऽज्ञातभावो महावीर्यत्वमल्पवीर्यत्वं चेत्येतदपि
तदेव वध्यवधकयोर्विशेषात्कर्मबन्धविशेष इत्येव व्यवस्थि
वध्यमेवाश्रित्य, सदृशत्वासदृशत्वव्यवहारो न विद्यत इति
तथाऽनयोरेव स्थानयोः प्रवृत्तस्यानाचारं विजानीयादिति
तथाहि—यज्जीवगाम्यास्त्रमव धसदृशत्वमुच्यते तदयुक्तम् । यत
न हि जीवव्यापत्त्या हिंसोच्यते, तस्य शाश्वतत्वेन व्यापादयितु
मशक्यत्वात् । अपि त्विन्द्रियादिव्यापत्त्या तथा चोक्तम्—पञ्चेन्द्रि
याणि, त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः । प्राण

सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।

उ० अध्य० २४ गाथा २१

तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि ।

दशवैकालिक अ० ४

दशन भगवद्भिरुक्तास्तेषा वियोगीकरण तु हिंसा ॥१॥ इत्यादि। अपि च भावसव्यपेक्षस्यैव कर्मब धोऽप्यपेतु युक्त । तथाहि—वयस्यागमसव्यपेक्षस्य, सम्यक् क्रियां युक्तो यद्यप्या तुरविपत्तिर्भवति तथापि न वैरानुषङ्गः भावदोषाभावाद् । अपरस्य तु सर्पबुद्धया रज्जुमपि घ्नतो भावदोषात्कर्मब-ध । तद्रहितस्य तु न बन्ध इति । उक्त चागमे उच्चाल्यमिपाए । इत्यादि तद्गुलमत्स्याख्यानक तु सुप्रसिद्धमेव । तदेवविधवध्य वधकभावापेक्षया स्यात् । सदृश स्यादसदृशत्वमिति । अन्य थाऽनाचार इति ॥७॥

जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सूत्र १८

निवर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदा परम् ॥९॥

णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव संजोयणाधिकरणिया चेव।

स्था स्थान २ सू. ६०

आइये निक्खिवेज्जा। उत्तरा० अ० २४ गाथा १४

पवत्तमाणं। उत्तरा० अ० २४ गाथा २१-२३

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥

णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए णाणनिण्हवणयाए णाणंतराएणं णाणप्पदोसेणं

णाणच्चासायणाए णाणविसंवादणाजोगेणं,
एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं ।
व्या० प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ७५-७६

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवना-
न्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेदस्य ॥११॥

परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए
परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं
पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव
परियावणयाए एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अस्साया
वेयणिज्जा कम्मा किज्जन्ते ।
व्याख्या० श० ७ उ० ६ सू० २८६

भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमा-
दियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेदस्य
॥१२॥

पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्ख णयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा किज्जंति।

व्या० प्रज्ञप्ति शतक ७ उ० ६ सू० २८६

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥

पचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्म पकरेंति, तं जहा-अरहंताणं अवन्नं वदमाणे १, अर हंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २, आयरिय उवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे ३, चउवण्णस्स संघ स्स अवण्णं वदमाणे ४, विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे।

स्था० स्थान ५ उ० २ सू० ४२६

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥

मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोगपुच्छा, गोयमा ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचारित्तमोहणिज्जाए । व्या० प्र० शतक ८ उ० ६ सू० ३५१

बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा–महारम्भताते महापरिग्गहयाते पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा–माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेण कूडतुल्लकूडमाणेण ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥

स्वभावमार्दवञ्च ॥१८॥

अप्पारम्भा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया ।

औपपातिक सूत्र संख्या १२४

चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताते कम्म पगरेंति त जहा–पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणु क्कोसयाते अमच्छरिताते ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेंति माणुसं जोणिं कम्मसच्चाहु पाणिणो ॥

उत्तरा० सू० अध्य० ७ गाथा २

नि:शीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥

एगतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरियाउयंपि पकरेइ मणुस्साउयंपि पकरेइ देवा उयंपि पकरेइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० १ उ० ८ सूत्र ६३

सरागसंयमसंयमासंयमाऽकाम-निर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा–सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

सम्यक्त्वं च ॥२१॥

वेमाणियावि जइ सम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्ज

ज्जति किं संजतसम्मद्दिट्ठीहिंतो असंजयसम्मद्दिट्ठी पज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठीपज्जत्तस खेज्ज० हिंतो उववज्जति? गोयमा! तीहिंतोवि उववज्जति एवं जाव अच्चुगो कप्पो।

प्रज्ञापना पद ६

योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥

तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥

सुभनामकम्मा सरीरपुच्छा? गोयमा! काय उज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणजोगेणं सुभनामकम्मा सरीरजावप्पयोगबन्धे, असुभनामकम्मा सरीरपुच्छा? गोयमा! कायअणुज्जुययाए जाव विसंवायणाजोगेणं असुभनामकम्मा जाव पयोगबन्धे। व्या० श० ८ उ० ९

दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥२४॥

अरहंतसिद्धपवयणगुरुथेरबहुस्सुए तवस्सीसु ।
वच्छल्या य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ॥१॥
दंसण विणए आवास्सए य सीलव्वए निरइयार ।
खणलव तव चियाए वेयावच्चे समाही य

अप्पुव्वणाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥३॥

ज्ञाताधर्म कथांग अ० ८ सू० ६४

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥

जातिमदेणं कुलमदेणं बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीरजाणपयोगबंधे।

व्या० शतक ८ उ० ६ सूत्र ३५१

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥

जातिअमदेणं कुलअमदेणं बलअमदेणं रूवअमदेणं तवअमदेणं सुयअमदेणं लाभअमदेणं इस्सरियअमदेणं उच्चागोयकम्मासरीरजाणपयोगबंधे।

व्या० शतक ८ उ ६ सू ३५१

विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभो
तराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मा सरीरप्प
ओगबंधे ।   व्या० प्र० श० ८ उ० ९ सू० ३५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
सङ्गृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
षष्ठोऽध्याय समाप्त ।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥

देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥

पच महव्वया पण्णत्ता, त जहा–सव्वातो पाण
तिवायाओ वेरमण । जाव सव्वातो परिग्गहात
वेरमण । पचाणुव्वता पण्णत्ता, त जहा–थूलात
पाणाइवायातो वेरमण थूलातो मुसावायातो वेरम
थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमण सदारसतो
इच्छापरिमाणे । स्था स्थान ५ उ० १ सू० ३

तत्स्थैर्यार्थं भावना पञ्च पञ्च ॥३

पचजामस्स पणवीस भावणाओ पण्णत्ता ।

समवायाग समवाय २५

(१) तस्स इमा पच भावणातो पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवाय वेरमण परिरक्खणट्टयाए ।

प्रश्न व्या० १ सवर० सू० २३

(२) तस्स इमा पच भावणा तो वितियस्स वयस्स अलिय वयणस्स वेरमण परि रक्खणट्टयाए ।

प्र० व्या० २ सवर० सू० २५

(३) तस्स इमा पच भावणातो ततियस्स होंति परदव्वहरण वेरमणपरिरक्खणट्टयाए ।

प्र० व्या० ३ सवर० सू० २६

(४) तस्स इमा पच भावणाओ चउत्थयस्स होंति अवभचेर वेरमणपरि रक्खणट्टयाए ।

प्र० व्या० ४ सवर० सू० २७

(५) तस्स इमा पच भावणाओ

घयम्म होति परिग्गह वेरमणपरि क्खणट्टयाए ।
अ० ७ उ० ५ व्यवहार सू० २६

वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमि-
त्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ॥४॥

इरिया समिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयभा यणभोयण आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ।
समवायांग समवाय २५

क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्याना
न्यनुवीचिभाषण च पञ्च ॥५॥

अणुवीति भासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे ।
समवायांग समय २५

शून्यागारविमोचितावासपरोपरो-
धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माऽविसंवादा
पञ्च ॥६॥

उग्गहअणुण्णवणया उग्गहसीमजाणणया सय मेव उग्गह अणुगिण्हणया साहम्मियउग्गह अणुण्णविय परिभुंजणया साहारणभत्तपाण अणुण्ण विय पडिभुंजणया । सम० समय ५

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ॥७॥

इत्थीपसुपंडगसंसत्तसयणासणवज्जणया इत्थीकहवज्जणया इत्थीण इंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरयपुव्वकीलिआण अणणुसरणया पणीताहारवज्जणया । सम० समय २५

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥८॥

सोइन्दियरागोवरई चक्खिदियरागोवरई घाणिं दियरागोवरई जिब्भिदियरागोवरई फासिंदियरागो वरई।

सम० समय २५

हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥

संवेगिणी कहा चउव्विहा पएणत्ता, तं जहा-इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी। णिव्वेयणी कहा चउव्विहा पएणत्ता, तं जहा–इहलोगे दुचिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥१॥ इहलोगे दुचिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥२॥ परलोगे दुचिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥३॥ परलोगे दुचिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥४॥

इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति ॥१॥ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति, एव चउभगो।
स्था० स्थान ४ उ० २ सूत्र २८२

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ११

मित्तिं भूएहिं कप्पए
सूत्र कृतांग० प्रथम श्रुतिस्कध अध्या० १५ गाथा ३
सुप्पडियाणदा । औप० सू० १ प्र० २०
साणुक्कोस्सयाए । औप० भगवदुपदेश
मज्झत्थो निज्जरापेही समाहिमणुपालए ।
आचारांग प्र० श्रुतस्कध अ० ८ उ० ७ गाथा ५

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ॥१२॥

संवेगकारणत्था ।

समवाय सू० विपाकसूत्राधिकार

भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ।

उत्तरा० अध्य० १६ गाथा ६४

अधिवं जीयलोगम्मि ।

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसपायचचलम् ।

उत्तरा० अध्य० १८ गाथा ११, १३

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥

तत्थ णं जेते पमत्तसजया ते असुहं जोगं पडुच्च आयारंभा परारंभा जाव णो अणारंभा ।

व्या० प्र० शतक १ उ० १ सूत्र ४८

असदभिधानमनृतम् ॥१४॥

अलिय असब्भ सधत्तण अस
ज्भाय अलिय । प्र० व्या० आस्रव० २

अदत्तादान स्तेयम् ॥१५॥

अदत्त तेणिक्को । प्र० व्या० आस्रव० ३

मैथुनमब्रह्म ॥१६॥

अबम्भ मेहुण । प्र० व्या० आस्रवद्वार ४

मूर्च्छा परिग्रह ॥१७॥

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो ।

दश० अध्ययन ६ गाथा २१

निःशल्यो व्रती ॥१८॥

पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं-मायासल्लेण नियाण सल्लेण मिच्छादंसणसल्लेण ।

आवश्यक० चतु० आवश्य० सूत्र ७

आगार्यनगारश्च ॥१९॥

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते, त जहा-आगार चरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव।

स्थानांग स्थान २ उ० १

अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥

आगारधम्म अणुव्वयाई इत्यादि।

औपपातिक सूत्र श्रीवार देशना

दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥

आगारधम्म दुवालसविह आइक्खइ, त जहा-पंच अणुव्वयाइं तिण्णि गुणव्वयाई चत्तारि सिक्खा वयाइं।

तिण्णि गुणव्वयाइं, तं जहा-अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं, उपभोगपरिभोगपरिमाणं । चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा-सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासे अतिहिसंविभागे ।

औपपातिक श्रीवीरदेशना सूत्र ५७

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥

अपच्छिमा मारणंतिआ संलेहणा जूसणाराहणा । औपपा० सू० ५७

शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः ॥२३॥

सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-संका कंखा वितिगिच्छा,

परपासंडपसंसा, परपासंडसंथवो ।

उपासकदशांग अध्याय १

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥२४॥

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपान-
निरोधाः ॥२५॥

थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा-बन्धवधच्छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए ।

उपा० अ० १

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेख-
क्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः २६

थूलगमुसावायस्स पंच अइयारा जाणियव्वा । न समायरियव्वा । तं जहा-सहसाभक्खाणे रहसा

भत्तपाणे, सदारमंतभेए मोसोवएसे कूडलेहकरणे य । उपा० अ० १

स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहारा ॥२७॥

थूलगअदिण्णादाणस्स पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-तेणाहडे, तक्करप्पओगे विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतुलकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे।

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशा. ॥२८॥

अहागमविभागस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपहणया, कालाइक्कमदाणे परोवएसे मच्छरिया। उपा० अध्या० १

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥३७॥

अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाराहणाए पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा-इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। उपा० अध्या० १

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्

समणोवासए ण तहारूवं समणं वा जाव पडि लाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारएण तमेव समाहिं पडिलभइ ।

व्या० श० ७ उ १ सूत्र २६३

समणो वासए ण भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ? गोयमा ! जीवियं चयति उच्चयं चयति दुक्करं करेति दुल्लहं लहइ बोहिं बुज्झइ तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति ।

व्या० प्र० शत० ७ उ० १ सू० २६४

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण तवस्सिविसुद्धेण

यगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण ।
व्या० प्र० शत० १५ सू० ५४१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीत तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
सप्तमोऽध्याय समाप्त ।

अष्टमोऽध्यायः



मिथ्यादर्शनाऽविरतिप्रमादकषाय-योगा बन्धहेतवः ॥१॥

पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा-मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा। समवा० समव ५.

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥

जोगबंधे कसायबंधे। समवा० समवाय ५.

दोहिं ठाणेहिं पापकम्मा बंधति, तं जहा-रागेण य दोसेण य। रागे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-माया

य लोभे य। दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कोहे य माणे य।
स्था० स्थान २ उ० ?

प्रज्ञापना पद २३ सू० ५

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥

चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पगइबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे।

समवायांग समवाय ४

आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥

अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-णाणावरणिज्जं, दसणावरणिज्जं, वेदणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं।

प्रज्ञापना पद २१ उ० १ सू० २८८

पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥५॥

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ॥६॥

पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे केवलणाणावरणिज्जे ।

स्थानांग स्थान ५ उ० ३ सू० ४६४

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥

नवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा-निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे, अवधिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ।

स्थानांग स्थान ९ सू० ६६८

सदसद्वेद्ये ॥८॥

सातावेदणिज्जे य असायावेदणिज्जे य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्री-

पुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥

मोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-दंसणमोहणिज्जे य चरित्तमोहणिज्जे य। दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-सम्मत्तवेदणिज्जे, मिच्छत्तवेदणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे।

चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविध पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कसायवेदणिज्जे नोकसायवेदणिज्जे।

कसायवेदणिज्जे णं भंते ! कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तं जहा-अण

आवरणिज्जाण दुण्हपि, वेयणिज्जे तहेव य।
अन्तराए य कम्ममि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उत्तराध्ययन अध्ययन ३३

सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥

उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ गाथा २१

विंशतिर्नामगोत्रयो ॥१६॥

उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ।
नामगोत्ताण उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
उत्तराध्ययन अध्य० ३३ गाथा २३

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष ॥१७॥

तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।
ठिइ उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २२

१ अणिच्चाणुप्पेहा, २ असरणाणुप्पेहा, ३ एग त्ताणुप्पेहा, ४ ससाराणुप्पेहा ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

अण्णत्ते [अणुप्पेहा] ५—अन्ने खलु णाति सजोगा अन्नो अहमंसि । असुइअणुप्पेहा ६ ।

सूत्रकृतांग श्रुतस्कध १ अ० १ सू० १३

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥

उत्तराध्ययन अ० १९ गाथा १२

अवायाणुप्पेहा ७ ।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

संवरे [अणुप्पेहा] ८—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन २३ गाथा ७१

णिज्जरे [अणुप्पेहा] ९ ।

स्थानांग स्थान १ सू० १६

यणासमिइ उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिइ ।

समवायांग समवाय ५

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥

दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—१ खंती, २ मुत्ती, ३ अज्जवे, ४ मद्दवे, ५ लाघवे, ६ सच्चे, ७ संजमे, ८ तवे, ९ चियाए, १० बंभचेरवासे ।

समवायांग समवाय १०

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यातत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ७

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नै-कोनविंशते ॥१७॥

णाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पन्नापरीसहे नाणपरीसहे य । वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तं जहा—

पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
तणफास जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जंमि ॥१॥

दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ । चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्तपरीसहा समोयरंति, तं जहा—

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयो-श्चतुर्दश ॥१०॥

एकादश जिने ॥११॥

बादरसाम्पराये सर्वे ॥१२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या-क्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥

वेदनीये शेषाः ॥१६॥

ममगप० जाव अनामप० पत्र अणुविहयथाम्म ति
सत्तविहवगास्स ति ।

छविहवधाम्म णं भन्ते ! मगाखु न पम्म
कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोद्दस पण्ण-
त्ता । बारस पुण वेदेइ । ज समय सी-
यपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसह वेदेइ ।
ज समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो त समयं सीय
परीसहं वेदेइ । ज समयं चरियापरीसह वेदेइ णो
तं समयं सेज्जापरीसह वेदेइ । ज समयं सेज्जापरी-
सह वेदेति णो तं समयं चरियापरीसह वेदेइ ।

एक्कविहबंधगस्स णं भन्ते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स
कति परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं चेव जहेव
छव्विहबंधगस्स णं । एगविहबंधगस्स णं भन्ते !
सजोगिभव अजोगिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण
वेदेइ, सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।